



ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे

निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्ष: 27 अंक: 49 बुलेटिन अवधि: 23-27 जून, 2018 दिन: शुक्रवार दिनांक: 22 जून, 2018

मौसम पूर्वानुमान:

भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा वित्त पोषित एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली द्वारा पूर्वानुमानित तथा मौसम केन्द्र, देहरादून द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

| पूर्वानुमानित मौसम तत्व | मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर | | | | |
|--------------------------------------|---------------------------------|--------------------|--------------------|--------------|--------------------|
| | 23/06/2018 | 24/06/2018 | 25/06/2018 | 26/06/2018 | 27/06/2018 |
| वर्षा (मिमी0) | 0 | 0 | 0 | 2 | 5 |
| अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.) | 38 | 38 | 38 | 37 | 35 |
| न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.) | 25 | 24 | 24 | 25 | 23 |
| बादल आच्छादन | आंशिक बादल | आंशिक बादल | आंशिक बादल | मध्यम बादल | घने बादल |
| अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत) | 80 | 80 | 75 | 80 | 85 |
| न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत) | 40 | 40 | 35 | 40 | 45 |
| वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा) | 006 | 008 | 008 | 006 | 008 |
| वायु की दिशा | पूर्व-दक्षिण-पूर्व | पूर्व-दक्षिण-पूर्व | पूर्व-दक्षिण-पूर्व | दक्षिण-पूर्व | पूर्व-दक्षिण-पूर्व |

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (15-21 जून 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से घने बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 30.0 से 39.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 24.1 से 26.8 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 79 से 91 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 33 से 79 प्रतिशत एवं हवा 2.9 से 8.7 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व-दक्षिण-पूर्व व पश्चिम-उत्तर-पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्ध:

- ❖ भावर एवं तराई में सोयाबीन बोने का उपयुक्त समय जून के अन्तिम सप्ताह जुलाई प्रथम सप्ताह तक है। बीज दर 75 किग्रा/है० रखे। बीज को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करे। उन्नत प्रजातियों PS-1024, PS-1042 PS-1092, PS-1241, PS1347, PS-1225, PS-19 आदि का प्रयोग करे। सोयाबीन की बुवाई 14-60 सेमी० पर लाइनो में 3-4 सेमी० गहराई पर करे। बुवाई के समय 20 kg N₂ 60 kg P₂O₅ and 40 kg/Ha पोटाश/है० का प्रयोग करे।
- ❖ मक्का में जहाँ तना बेधक का प्रकोप होता है। बुवाई के समय कार्बोफ्यूरोन 3सी०जी० 33 किग्रा/है० की दर से मृदा में डालें।
- ❖ धान की नर्सरी डाले।
- ❖ धान की प्रजातियों में मिलावट न हो, इसके लिए पौधशाला उन खेतों में बनाए जहाँ पिछले वर्ष धान नहीं लगाया गया था तथा उस जगह धान की गुड़ाई/मढ़ाई नहीं किया गया हों।
- ❖ नर्सरी हेतु प्रमाणित बीज अथवा स्वस्थ स्वयं उत्पादित बीज उपचार के बाद प्रयोग करना चाहिए।
- ❖ बासमती तथा सुगंधित धान की किस्मों जैसे- टाइप-3, तरावड़ी बासमती, पूसा बासमती-1, पंत सुगंध धान-17, 21, पी० आर० एच० 10 आदि की पौध 30 जून तक अवश्य डालें।
- ❖ मुगफली की उन्नतशील प्रजातियों- टा० 64, चन्द्रा, कौशल, प्रकाश, अम्बर आदि की बुवाई जून के दूसरे पखवाड़े में करे। बीज दर 60-70 कि० ग्रा०/है० रखें तथा 30-45 सेमी० की दूरी पर बने लाइनो में बुवाई करे। उर्वरकों में नत्रजन 20 किग्रा० P₂O₅ 40 किग्रा० और 45 किग्रा० पोटाश/है० तथा 200 किग्रा० जिप्सम तथा 4 किग्रा० बोरेक्स का प्रयोग करे।
- ❖ लोबिया व फ़ासबीन में जड़ एवं तना गलन रोग की रोकथाम हेतु कार्बन्डाजिम 1 ग्राम/ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ गन्ना में काला बग का प्रकोप हो तो क्लारपाइरीफॉस 20 ई० सी० के 2.0 ली० /है० या फेन्थोएट 50 ई० सी० के 1.0 ली०/है० या क्यूनसलफॉस 25 ई० सी० के 2.0 ली० को 500 ली० पानी में घोल कर छिड़काव करे।

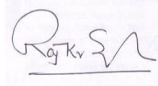
उद्यान प्रबन्ध:

- ❖ आम के बौने पौधों में फल की तुड़ाई प्रातः अथवा सांयकाल सिकेटियर की सहायता से तथा उँचे वृक्षों में फल तोड़क यंत्र की सहायता से की जानी चाहिए।
- ❖ आम में फल मक्खियों के नियंत्रण हेतु यौन गंध ट्रैप को बदलना चाहिए तथा एकत्रित मक्खियों को निकालकर फँक देना चाहिए।
- ❖ आम की शीघ्र पकने वाली किस्मों की तुड़ाई करे।
- ❖ कद्दू वर्गीय सब्जियों में पत्तियों पर अनियमित आकार के चित्तकबरे धब्बे दिखाई देने पर मैनकोजेब 2.5 ग्रा० प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ❖ प्याज में पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली० प्रति है० की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी का स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करे।
- ❖ टमाटर व मिर्च की फसल में सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधों को निकालकर नष्ट करे। तथा रस चूसने वाले कीड़ों के नियंत्रण हेतु सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करें। पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा०/ली० या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा० प्रति ली० पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

पशुपालन प्रबन्ध:

- ❖ पशुओं को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ नाइट्रेट विषाक्तता होने पर पशु की श्वसन एवं नाड़ी दर बढ़ जाती है एवं सांस लेने में कठिनाई, मॉसपेशियों में ऐंठन व कमजोरी आ जाती है। इससे बचाव हेतु मेथिलीन ब्लू के 1 प्रतिशत विलयन की 50-100 मि०ली० मात्रा सीधे ही नस में देना चाहिए।
- ❖ सायनाइड ग्रस्त चारा खाए हुए पशु को पानी नहीं पिलाना चाहिए तथा चारागाहों में चराने ले गये पशुओं को कम बढ़ी हुई ज्वार, बाजरा, चरी की फसल न खाने दे।

- ❖ छोटे मुझाये हुए पीले व सुखकर ऐटे हुए पौधो को चारे के रूप में उपयोग नही करे।
- ❖ पशुओं को स्वच्छ, ताजा एवं ठंडा जल दिन में तीन बार (सुबह, दोपहर, शाम) पिलाना चाहिए। यदि पशु के शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी मौजूद हो तो उसकी चमड़ी के तापमान एवं मौसम के तापमान में सामंजस्य बना रहता है एवं पशु को लू भी नहीं लगती।



डा० आर० के० सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर